हरित रोजगार: बदलाव में श्रमिक कहां हैं?

प्रकाशित: 13 नवंबर 2026 · pcsmantra.com



मौलिक प्रतीकात्मक चित्र: pcsmantra.com

खबरों में क्यों?

भारत में स्वच्छ ऊर्जा, इलेक्ट्रिक वाहनों, पुनर्चक्रण और पारिस्थितिकी बहाली के विस्तार से रोजगार के नए अवसर बन सकते हैं। एक शोध-आकलन में 2035 तक लगभग 96 लाख से 1.3 करोड़ रोजगार की संभावना बताई गई है। यह वर्तमान में मौजूद नौकरियों की गिनती या सरकार की सुनिश्चित भर्ती-घोषणा नहीं है। इसका दायरा और मान्यताएं समझे बिना केवल बड़ी संख्या याद करना भ्रामक होगा।

हरित रोजगार क्या है?

हरित रोजगार: ऐसा काम जो पर्यावरण को सुरक्षित रखने या बहाल करने, संसाधनों का बेहतर उपयोग करने अथवा प्रदूषण और उत्सर्जन घटाने में योगदान दे। सौर संयंत्र का रखरखाव, इलेक्ट्रिक वाहन की मरम्मत, सुरक्षित पुनर्चक्रण और वन-बहाली इसके उदाहरण हैं।

काम की गुणवत्ता: पर्यावरण को लाभ पहुंचाने वाला हर काम अपने-आप सुरक्षित और अच्छी मजदूरी वाला नहीं होता। बिना सुरक्षा उपकरणों के कचरा छांटना पर्यावरण के लिए उपयोगी गतिविधि हो सकती है, लेकिन श्रमिक के लिए खतरनाक भी हो सकती है। इसलिए हरित नीति के साथ श्रम-सुरक्षा और सामाजिक सुरक्षा जरूरी है।

रोजगार की संभावना को कैसे पढ़ें?

शोध ने चार व्यापक क्षेत्रों का अध्ययन किया: हरित ऊर्जा, इलेक्ट्रिक परिवहन, चक्रीय अर्थव्यवस्था और प्रकृति-आधारित समाधान। चक्रीय अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और पदार्थों को मरम्मत, पुनः उपयोग तथा पुनर्चक्रण से लंबे समय तक काम में रखा जाता है। प्रकृति-आधारित समाधान में वनों या मैंग्रोव की बहाली जैसे कार्य आते हैं।

दायरा	2035 का आकलन	जरूरी सीमा
नवीकरणीय ऊर्जा, हरित हाइड्रोजन, EV विनिर्माण/चार्जिंग, औपचारिक पुनर्चक्रण और प्रकृति-आधारित गतिविधियां	लगभग 96 लाख	मॉडल-आधारित संभावना
ऊपर के साथ मुख्यतः अनौपचारिक EV सर्विसिंग और नगर-कचरे की सामग्री-वसूली	लगभग 1.3 करोड़	अनौपचारिक आजीविका जोड़ने से दायरा बढ़ता है
प्रकृति-आधारित समाधान	लगभग 41.5 लाख पूर्णकालिक-समतुल्य अवसर	बहाली बढ़ाने की संभावना; हर वर्ष उतनी नई नियुक्तियां नहीं

पूर्णकालिक-समतुल्य रोजगार: काम के कुल घंटों को एक पूर्णकालिक नौकरी के घंटों के बराबर इकाइयों में बदलना। दो अंशकालिक काम मिलकर एक पूर्णकालिक-समतुल्य अवसर हो सकते हैं। इसलिए यह हमेशा अलग-अलग व्यक्तियों की संख्या के बराबर नहीं होता।

इन आकलनों में निवेश, सरकारी लक्ष्यों और प्रति इकाई गतिविधि में लगने वाले श्रम जैसी मान्यताएं शामिल हैं। लक्ष्य और निवेश पूरे न हों तो वास्तविक रोजगार अलग हो सकता है।

पुरानी नौकरियों का क्या होगा?

कौशल-अंतरण: मौजूदा काम का कुछ ज्ञान नई तकनीक में भी उपयोगी हो सकता है। बिजली मिस्त्री, मशीन ऑपरेटर और रखरखाव तकनीशियन कुछ प्रशिक्षण के बाद नए क्षेत्रों में जा सकते हैं।

शोध में ताप विद्युत से नवीकरणीय ऊर्जा और हरित हाइड्रोजन के लिए जांचे गए स्रोत-से-गंतव्य भूमिका-सुमेलन में लगभग 71% में उच्च या मध्यम कौशल-अंतरण मिला। यह नहीं कहता कि 71% श्रमिकों को नई नौकरी मिल चुकी है या हर श्रमिक बहुत छोटे कोर्स के बाद काम बदल सकेगा।

स्थान का अंतर: कोयला-निर्भर जिले की नौकरी और दूसरे राज्य की सौर परियोजना की नौकरी अलग श्रम बाजारों में हो सकती हैं। यात्रा, आवास, भाषा और परिवार की जिम्मेदारियां नौकरी बदलना कठिन बना सकती हैं।

समय का अंतर: पुरानी नौकरी खत्म होने और नई नौकरी बनने का समय एक जैसा नहीं होता। इस बीच आय-सुरक्षा के बिना केवल प्रशिक्षण पर्याप्त नहीं है।

न्यायोचित औद्योगिक परिवर्तन

न्यायोचित परिवर्तन का अर्थ है स्वच्छ उत्पादन की ओर बदलाव में श्रमिकों और प्रभावित समुदायों को असमान लागत न उठानी पड़े। नीति में चार प्रश्न साथ पूछे जाएं: नया काम कहां बनेगा, उसमें कौन प्रवेश कर सकेगा, उसकी गुणवत्ता क्या होगी और बीच की आय-हानि कौन संभालेगा?

- **जिला-स्तरीय योजना:** स्थानीय उद्योग, कौशल और आजीविका-निर्भरता का मानचित्रण हो; केवल राष्ट्रीय कुल पर योजना न बने।
- **नियोक्ता से जुड़ा प्रशिक्षण:** पाठ्यक्रम वास्तविक पदों, उपकरणों और प्रशिक्षुता से जुड़े। प्रशिक्षण प्रमाणपत्र के साथ नौकरी और मजदूरी के परिणाम भी मापे जाएं।
- **पूर्व कौशल की पहचान:** अनुभवी श्रमिक को सारी शिक्षा शून्य से शुरू न करनी पड़े; जहां संभव हो वहां पूरक प्रशिक्षण दिया जाए।
- **अनौपचारिक श्रमिकों का समावेश:** मरम्मत, कचरा-वसूली और छोटे ठेकेदारों के श्रमिकों को सुरक्षा उपकरण, पहचान और सामाजिक सुरक्षा मिले।